Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-4, March-2024
www.researchguru.net

अलका सरावगी का शेष कादम्बरी उपन्यास में नारी विमर्श

डॉ. सुरतनभाई मानसिंगभाई वसावा

मददनीश प्राध्यापक, हिंदी विभाग सरकारी विनयन एवं विज्ञान कॉलेज, देडियापाडा
Mo: 9712242484 Email: surtan.vasava83@gmail.com

प्रस्तावना :-

आज पूरे विश्व में नारी विमर्श का विषय काफी चर्चास्पद रहा है। विश्व में नारी आज अत्यंत यातनापूर्ण जीवन यापन कर रही है। प्रवर्तमान युग में जीवन की जटिल परिस्थितियाँ, सामाजिक रिश्तों, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों एवं व्यक्तिगत तनावों का सही प्रतिबिंब समाज में साहित्य के रूप में पाठकों का कंठहार है। मानवीय परिवेशगत मूल्यों के उद्‌घाटन का प्रयत्न करता है एवं उनका यही प्रयत्न साहित्य सृजन करता है। समाज में होने वाले राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं वैचारिक परिवर्तनों के प्रति समाज अत्यंत सजग रहता है। वे अपनी परंपरा के माध्यम से उस परिवर्तन को समग्र रूप में प्रकट करने का प्रयत्न करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अमानवीय हिंसा, भयावह गरीबी, घुटन, ग्लानि, अत्याचार, अनिश्चितता, भूखमरी, अकाल, बाढ़ प्रकोप, व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राजनीतिक अस्थिरता के परिवेश में समाज में असंतोष, विद्रोह एवं धृणा का जहर फैल गया है। भ्रष्टाचार के इस साम्राज्य में छटपटाती पीढ़ी अपनी अलग तथा व्यक्तिगत पहचान खोजने के लिए विद्रोह का नकारात्मक स्वर बुलन्द कर रही है।

शेष कादम्बरी उपन्यास में नारी विमर्श :-

नारी विमर्श आज के समाज का ज्वलंत विषय है। नारी को केंद्र बनाकर आज साहित्य की विधाओं में कई विषयों पर पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं। आधुनिक युग व्यक्ति स्वातंत्र्य एवं समानता का युग है। आज मानव दासता की बेड़ियाँ तोड़कर नई स्वतंत्र जीवन चेतना के साथ प्रगति के अछूते शिखरों का स्पर्श कर रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र मे उन्नति के अवसर पाने के लिए मचल रहा है। अपने व्यक्तित्व के चौमुखी विकास के लिए आज हर किसी को समान अधिकार प्राप्त हैं चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो। कानून की दृष्टि से भी स्त्री की स्थिति पुरुष के बराबर है परंतु दैनंदिन जीवन में पितृसत्तात्मक संस्था, परिवार, धार्मिक संस्कारों एवं परंपराओं तथा अन्य सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अभी बहुत व्यापक है एवं जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष का ही प्रभुत्व है। पुरुष एवं नारी में उपलब्दि, अभिवृत्ति, सहज, रूचि, व्यावसायात्मक रूचि, मान्यता, व्यक्तित्व आदि सभी दृष्टिकोण में विभिन्नता है। स्वभाव संबंधी सर्वेक्षणों के भी दो समूह बन गये हैं। जिनमें से अधिक धैर्य युक्त समूह नारी से संबंधित माना जाता हैं एवं अधिकार प्रियता को पुरुष संबंधी माना जाता है। देश में आये दिन स्त्री स्वातंत्र्य एवं सम्मान के सीदें पढ़े जाते हैं लेकिन असलियत में औरत को बाल्यावस्था हो, यौनावस्था हो या वृद्धावस्था हर एक में भेदभाव, जुल्म एवं शोषण से दो चार होना पड़ता है, उस दशा में जबकि इस देश में उसकी पूजा होती है। आज समाज, राजनीति एवं साहित्य में स्त्रीवाद, स्त्री विमर्श एवं स्त्री दोह मुक्ति की कोलाहल कलह मची है। साहित्य एवं विचार के क्षेत्र में स्त्रीवाद से आगे उत्तर स्त्रीवाद के नारे बुलंद किए जा रहे हैं। बावजूद इसका कड़वा सच है कि

एक आम स्त्री के सामने अपनी अस्मिता का प्रश्न आज भी उतना ही ज्वलंत है जितना सौ साल पहले था।

शेष कादम्बरी अलगा सरावगी का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है। यब उपन्यास स्त्रियों पर विचार करके चित्रित किया गया है। जो कथा के माध्यम से व्यक्त हुआ है। इस उपन्यास में नारी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं एवं अनेक नारी पात्रों की मिली जुली झांकियाँ देखने मिलती है। जैसे कि रूबी दी, सविता, कादम्बरी, सायरा, कम्मो, लीला दाई, शीला आभा जैन, शकुन्तला, यामा, बोस, अर्पणा, बनर्जी, कल्याणी हालदार, अरूंधती, फरहा, निवेदिता, मिसेज सूद एवं श्यामा आदि सभी नारी पात्रों में नारी पात्रों में जीवन का मिला जुला रूप है। कुछेक नारी पात्रों में परंपरागत जीवन ल्य बोध है तो कुछेक प्रगतिशीलता एवं आधुनिक प्रश्नों को खड़ा करती है परंतु अधिकाँश नारी सृष्टियाँ अपने को सामंतवादी मूल्यों से मुक्त नहीं कर पाई हैं। इन सबके उत्थान का आशावादी पक्ष हमें नये युग के प्रति आशवस्त करता है।

नारी का जीवन अभावों का सागर है एवं इस सागर में कुछेक बूँदे विचारों के अभाव का भी है। लेखिका ने नारी पात्र सविता के माध्यम से नारी की उस सीमित सोच के दायरे को प्रस्तुत किया हैं जो मानसिक रूप से अपनी प्रगति के दायरे को बढ़ाने की अनुमति प्रदान नही करती है। जैसे कि "वह उनकी उम्मीद के ठीक मुताबित लड़की टेबुल के नीचे निगाहें जमाए अपने हाथ की रेखाओं को देखती हुई उनके पहले प्रश्न का इन्तजार कर रही थी। रूबी दी को जोर की चिढ़ हुई। इस लड़की से पाँच-सात बार मिल लेने के कारण वे इतना जान गयी थी कि यह लड़की कुछ भी कहने से पहले हमेशा प्रश्न पूछे जाने का इन्तजार करती है एवं इतना छोटा जवाब देती है कि उससे पूरी बात समझने के लिए कम से कम चार प्रस्न और करने पड़े।" वास्तव में नारी की इस सीमित सोच का कारण वह समाज है जिसमें वह पैदा होकर बड़ी होती है। "जिस दुनिया में वे बड़ी हुई थी, वहाँ इस तरह की कोई निजी बात, जिसको पूछने का कोई विशेष मकसद न हो, किसी से पूछना अमर्यादित व्यवहार था।" इस अमर्यादित व्यवहार से बचने एवं अपने को मर्यादित बनाए रहने के लिए वह उस सीमा मे कैद रहती है जिसका निर्धारण समाज उसके लिए करता है। "अपनी जिंदगी को एक नया मोड़ देने के लिए जब घर की चहरदीवारी के बाहर कदम रखा था, तब से आज तक ऐसा नहीं हुआ कि आद गंगा का बेलीस पुल पार करने के बाद घर की तरफ जाते हुए उन्होंने घर गृहस्थी के अलावा किसी के बारे में कुछ सोचा हो। पुल पार करते ही उनकी दुनिया का वह हिस्सा जिसमें वे दूसरों के लिए जीती थी, एकदम कटकर अलग हो जाता था। यह पुल उनके लिए लैंडमार्क था अपनी दुनिया में प्रवेश की सरहद थी।" रूबी दी के जीवन से जुड़ी यह तथ्य नारी जीवन की सीमा से बाहर आकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती है, वह या तो पुरुष व्यंग्य, हँसी की पात्र बनती है या बार-बार अपमानित की जाती है। अपनी सरहदों मे कद उसके पास अत्याचार, प्रताड़ना, शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए जुबान का अभाव है।

शेष कादम्बरी उपन्यास की नारी पात्र रूबी दी की व्यथा-कथा में अपने दाम्पत्य की यंत्रणाओं के माध्यम से औरत के भाग्य को लेकर पति के निर्दयी व्यवहार पर टिप्पणी की गयी है कि "नहीं रेप नहीं किया उसने मेरे शरीर का। खुद मेरी मर्जी के लिए वह निरे बेमन से सिर्फ दो-तीन मिनट के लिए आता था मेरे पास। उसे एक से एक सुंदर लड़कियों के साथ घूमने की आदत जो थी। और मैं? मैं इस तरह सूखी हुई रहती कि रेप से भी ज्यादा कष्ट होता था मुझे। अरे विधाता, तूने औरत को क्या सिर्फ पीड़ा झेलने के लिए बनाया- किसी पुरानी फिल्म के घटिया डायलाग की तरह यह कम्प

उसके अंदर गूँज कर रह गया।" इसी प्रकार दाम्पत्य की इस कड़वाहट ने जिसे रूबी दी का जीवन निरस्तार करके रख दिया था। विवाह संस्कार की इस बेमानी एवं नीरस जीवन के दाम्पत्य की कुंठाओं को, पति से यौन तुष्टि न हो पाने की पीड़ा को नारियाँ चुपचाप सहन करती है क्योंकि इसके किलाफ आवाज उठाना अपने आप को अमर्यादित घोषित करना है। मर्यादा की सीमा में कैद नारी एक सुखी पारिवारिक जीवन की चाह में निरंतर इन अत्याचारों को झेलती रहती है एवं इनकी पीड़ा को बर्दास्त करती रहती है। पुरुष दंभ एवं अहंकार का फन इतना विकराल एवं विश्वास होता है कि स्त्री चाहकर भी उसे लचीला बनाकर अपनी तरफ मोड़ नहीं पाती है। पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी नारी उनसे मुक्ति नहीं पा सकती।

निष्कर्ष :-

अत: उपरोक्त तथ्य के आधार पर हम कह सकते हैं कि नारी के इस अदम्य साहस एवं शक्ति के कारण वह दिन दूर नहीं है जब जब उसकी अपनी पहचान बिना किसी सूचक के होगी। नारी आदी आबादी का प्रमुख हिस्सा है एवं समाज में उसका वहीं अस्तित्व है जो एक पुरुष का है। स्त्री शोषण, अन्याय एवं अत्याचार का इतिहास जितना पुराना है उतना ही मजबूत है। वर्तमान प्रगतिशील समाज में नारी अपनी पहचान लहराने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। किसी भी समाज मे पुरुष वर्ग की ताकतों के बीच एक नारी का अपना अस्तित्व स्थापित करना उसके अदम्य साहस का प्रतीक है। जिस समाज में हर क्षेत्र में पुरुष की सत्ता सदैव हो उस समाज में एक स्त्री का अपनी जगह बनाना एक नये इतिहास का निर्माण करता है।

संदर्भ :-

1. सरावगी, अलका, शेष कादम्बरी, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2022
2. प्रसाद, शंकर, सामाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान, अनुपम प्रकाशन, पटना, 1978
3. रामदोनी, रेशमा, समकालीन हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में अभिव्यक्त बहुआयामी विद्रोह, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, 2001